Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal
Volume - 8, Issue - 12, December - 2025
ISSN(o): 2581-6241
Impact Factor: 9.134

DOIs:10.2018/SS/202512006 --:-- Research Paper / Article / Review

अभिमन्यु अनत के गद्य साहित्य में मॉरीशसीय जन-जीवन और सामाजिक यथार्थ का चित्रण

रजनी
(शोधार्थी), बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय अस्थल बोहर (रोहतक)
Email - rajni4478gmail.com

शोध-सारांश : अभिमन्यु अनत मॉरीशस के हिंदी साहित्य के एक प्रमुख स्तंभ हैं, जिन्हें "मॉरीशसीय हिंदी कथा-साहित्य का सम्राट" कहा जाता है। उनका साहित्य न केवल मॉरीशस में प्रवासी भारतीयों की अस्मिता को नई पहचान देता है, बल्कि भारतीय संस्कृति और हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अनत के गद्य साहित्य में, विशेष रूप से उनकी कहानियों और उपन्यासों में, सामाजिक यथार्थ, आम जन-जीवन के संघर्ष, समाज में व्याप्त विसंगतियों, पूंजीपतियों के शोषण, और राजनीतिक भ्रष्टाचार का सजीव चित्रण मिलता है। इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य अभिमन्यु अनत की चुनिंदा गद्य रचनाओं में निहित सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक संदर्भों का अध्ययन करना और यह पता लगाना है कि वह किस प्रकार इन कहानियों के माध्यम से आम लोगों के जीवन, उनके संघर्षों और मानवीय मूल्यों को वाणी देते हैं।

मुख्य-शब्द : समाज, यथार्थ, मॉरीशस, प्रवासी जीवन, वर्ग-संघर्ष, आत्म-सम्मान, शोषण, मानवीय मूल्य, जातिवाद, असमानता ।

प्रस्तुत शोध पत्र में, हम उनकी दस विशिष्ट रचनाओं - 'नन्हे मछुए का भाग्य', 'अपने लोग', 'चुसी हुई ईख', 'अखबार', 'मशीन की मृत्यु', 'दूध', 'जीवित मुर्दा', 'एकलव्य का अंगूठा', 'उद्घाटन' और 'नचिकेता' - का विश्लेषण करेंगे, ताकि उनके साहित्य में परिलक्षित होने वाले मॉरीशसीय समाज के यथार्थ और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को समझा जा सके। यह शोध विश्लेषणात्मक और वर्णनात्मक पद्धति पर आधारित है। इसमें अभिमन्यु अनत की विशिष्ट कहानियों का पाठ विश्लेषण किया जाएगा और विभिन्न साहित्यिक स्रोतों और समीक्षाओं का उपयोग करके उनके साहित्य के केंद्रीय विषयों की पहचान की जाएगी।

अभिमन्यु अनत की रचनाएं मॉरीशस के गिरमिटिया मजदूरों के वंशजों के जीवन के इर्द-गिर्द घूमती हैं, जो अपनी पहचान और जड़ों की तलाश में संघर्षरत हैं।

1. 'नन्हे मछुए का भाग्य' और 'अपने लोग'

ये कहानियाँ मॉरीशसीय समाज के निम्न और मध्यम वर्ग के लोगों, विशेषकर मछुआरा समुदाय और प्रवासी भारतीयों के जीवन की कठिनाइयों को दर्शाती हैं। 'नए मछुए का भाग्य' में, वह भाग्य और श्रम के

द्वंद्व को चित्रित करते हैं, जहाँ व्यक्ति अपने जीवन की दिशा स्वयं तय करने का प्रयास करता है। 'अपने लोग' आत्मीयता और सामाजिक संबंधों की जटिलताओं पर प्रकाश डालती है, जहाँ प्रवासी जीवन में अपनेपन की तलाश प्रमुख विषय है।

अभिमन्यु अनत का साहित्यिक योगदान मॉरीशस में हिंदी साहित्य के क्षेत्र में 'अनत युग' के नाम से जाना जाता है। उनकी कहानियाँ केवल मनोरंजन के लिए नहीं हैं, बल्कि वे सामाजिक और सांस्कृतिक मुद्दों को गहराई से छूती हैं। "नन्हे मछुए का भाग्य" और "अपने लोग" दो ऐसी कहानियाँ हैं जो मॉरीशस के ग्रामीण जीवन, वर्ग-संघर्ष और मानवीय संबंधों की जटिलताओं को दर्शाती हैं।

"नन्हे मछुए का भाग्य" :

"नन्हे मछुए का भाग्य" कहानी, जैसा कि नाम से पता चलता है, मछुआरे समुदाय के जीवन और उनके भाग्य से जूझने की कहानी है। यह कहानी दर्शाती है कि कैसे गरीब और मेहनतकश लोग पूंजीपतियों और व्यवस्था के हाथों शोषित होते हैं। इस कहानी में लेखक ने एक ऐसे मछुआरे का वर्णन किया है जिसे एक मोती मिल जाता है लेकिन उसे जानकारी ही नहीं होती कि वह मोती है और उसकी क्या कीमत है वह मोतियों के जानकार लोगों से मिलता है लेकिन उसे कोई भी सही जानकारी नहीं देता है जब वह अंत में किसी हीरे के विशेषज्ञ व्यक्ति के पास जाता है; जब उसे पता चलता है, तब तक मोती कहीं खो चुका था।

“वहाँ भी निराश होकर मछुए का बेटा एक जौहरी के पास पहुँचा। जौहरी ने सीपी को उलट-पुलट कर देखा। वह भीतर के दाने को भी गौर से देखता रहा, पर उसे एक नन्हे से मछुए के भाग्य पर विश्वास नहीं हुआ। वह मानने को तैयार नहीं हुआ कि एक ग़रीब मछुए के हाथ मोती आ सकता था। अतः उसका निर्णय यही रहा कि वह मोती नहीं था। मछुए के बेटे को इस बात का विश्वास नहीं हुआ। वह दौड़ता रहा। कोई तीन-चार व्यक्तियों के बाद उसे एक ऐसे व्यक्ति का नाम बताया गया जो सचमुच ही हीरे का विशेषज्ञ था। रात भर दौड़ते रहने के बाद सूरज की प्रथम रश्मियों के साथ यह उस व्यक्ति के सामने पहुँचा। विशेषज्ञ ने कहा, "देखें तो क्या चीज।" नन्हें मछुए ने जेब में हाथ पहुँचाया और अवाक रह गया। यात्रा के दौरान सीपी उसकी जेब से छूटकर न जाने कहाँ गिर गई थी।“ 1

"नन्हे मछुए का भाग्य" केवल एक मछुआरे की कहानी नहीं है, बल्कि यह उन सभी प्रवासी मजदूरों का प्रतीक है, जिन्हें बेहतर जीवन के सपने दिखाकर मॉरीशस लाया गया और फिर उनका शोषण किया गया। कहानी में मछुआरों का संघर्ष जीवन के मूलभूत अधिकारों और सम्मानजनक जीवन के लिए चल रहे व्यापक संघर्ष का हिस्सा है।

"अपने लोग" :

"अपने लोग" कहानी मानवीय रिश्तों, प्रेम-विवाह की समस्याओं, जातिगत भेदभाव और अपनेपन की भावना की तलाश पर केंद्रित है। यह कहानी दर्शाती है कि आधुनिक समाज में भी लोग किस प्रकार की विसंगतियों और रूढ़ियों का सामना करते हैं। शहर में पहुँचे उसका सातवाँ दिन था।

" किसी की इसी बात पर वह गाँव छोड़ आया था। वहाँ अगर गन्ने काटने का काम भी उसे मिल जाता तो वह इधर नहीं आता। सात दिन से उसने कोई सात सौ दरवाजे खटखटाए। नौकरी कहीं नहीं थी। जिस पंद्रह रुपए के साथ वह शहर पहुँचा था वह तो चार ही दिन बाद समाप्त हो गए थे। अपनी कलाई घड़ी

बेच कर उसने जो 30 रुपए पाए थे उसी के पंद्रह रुपए उसकी जेब में थे। गलियों के चक्कर काटने के बाद वह उसी बाग़ की एक बेंच पर जा बैठा जहाँ उसकी रातें बीती थी" 2

कहानी में नारी-पुरुष संबंध, अंतरजातीय और अंतर्धार्मिक विवाह की जटिलताएँ प्रमुखता से उभरी हैं। पात्र अपने व्यक्तिगत जीवन में प्रेम और सामाजिक मान्यताओं के बीच संतुलन बनाने की कोशिश करते हैं, जो अक्सर संघर्ष का कारण बनता है। कहानी के पात्र अपने समाज में व्याप्त विसंगतियों और रूढ़ियों के कारण अलगाव महसूस करते हैं। वे अपने 'लोग' (समाज या परिवार) के बीच रहते हुए भी अकेले पड़ जाते हैं। यह स्थिति प्रवासी जीवन की उस त्रासदी को भी दर्शाती है, जहाँ लोग अपनी जड़ों से कटकर एक नई जगह पर अपनी पहचान बनाने का प्रयास करते हैं। "अपने लोग" में व्यक्ति स्वयं के व्यक्तित्व की सही तलाश करना चाहता है, उपकार के बोझ से हटकर अपनी नई पहचान बनाना चाहता है। यह कहानी सामाजिक दबावों के बावजूद व्यक्तिगत स्वतंत्रता और आत्म-सम्मान की खोज का संदेश देती है।

"कई गलियों के चक्कर काटने के बाद उसे मालूम हुआ कि लिफ़ाफ़े पर जो पता था उस नाम की न तो गली थी शहर में और न ही कोई कारखाना। लेकिन लिफ़ाफ़ा ख़ाली नहीं था। उसके भीतर कुछ था जरूर। उसने लिफ़ाफ़े को फाड़ा। छोटा सा काग़ज़ का टुकड़ा था जिस पर लिखा हुआ था, "यार मुझे माफ़ करना। घर पर बीमार पत्नी और तीन बच्चे हैं जिनके लिए यह धंधा करना पड़ता है। इस धंधे के अलावा मैं भी तुम्हारी तरह बेकार हूँ।"3

अभिमन्यु अनत की ये कहानियाँ मॉरीशस के समाज का दर्पण हैं। "नन्हे मछुए का भाग्य" आर्थिक शोषण और वर्ग-संघर्ष को सामने लाती है, जबकि "अपने लोग" सामाजिक और पारिवारिक रिश्तों की जटिलताओं और पहचान के संकट को उजागर करती है। दोनों कहानियों में अभिमन्यु अनत ने आम आदमी के जीवन के संघर्षों, उनकी पीड़ाओं और आकांक्षाओं को बड़ी सूक्ष्मता और संवेदनशीलता के साथ चित्रित किया है। उनकी यथार्थवादी शैली और मानवीय मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता इन कहानियों को विशेष बनाती है।

2. 'चुसी हुई ईख'

यह कहानी गिरमिटिया मजदूरों के इतिहास और उनके शोषण का प्रतीक है। मॉरीशस की अर्थव्यवस्था में ईख (गन्ना) का महत्वपूर्ण स्थान रहा है, और यह रचना उन मजदूरों की पीड़ा को बयां करती है, जिन्हें "सोना मिलने" का सपना दिखाकर लाया गया था, लेकिन यहाँ उनका जीवन ईख की तरह चूस लिया गया।

"बिसेसर सोचता इसमें उसका दोष क्या है। बच्चों को तो आना था इसलिए वे आए हैं। उसे जोरों की प्यास लगी थी। लछला अभी तक पानी लेकर नहीं आया था। इधर उसकी कमर भी टूटी जा रही थी। उसने टूटी हुई ईखों की तरफ देखा। उनका जामुनी रंग कह रहा था कि वे कितनी मीठी होंगी। वह मुंडेर पर बैठ गया। एक मोटी सी ईख उठा कर उसे घुटने के बल तोड़ा। मुँह तक पहुँचाने वाला था कि सामने से साहूकार आ गया। उसकी नज़र मुखिया पर थी। बिसेसर के पास पहुँच कर उसने अपने हाथ से ईख का टुकड़ा ले लिया। उसे घुमा-घुमा कर देखते हुए बोला-इस बार को ईख में बस चीनी-ही-चीनी है। अपनी जगह से उठा और बिसेसर ने छिलके लौटाकर आगे को बढ़ गया। जाते-जाते भी उसकी नज़र सुखिया पर थी। बिसेसर ने छिलके उतार कर ईख को चूसा और आश्चर्यचकित रह गया। ईख पनछोछर थी। उसमें तनिक भी मिठास नहीं थी। बगल में गुरुवा काम कर रहा था। उसने हँसकर कहा, "अरे जिस सोने को बेरहम सरदार छू ले वह मिट्टी हो जाता है।"4

अभिमन्यु अनत की कहानी "चुसी हुई ईख" मॉरीशस के प्रवासी भारतीयों के जीवन के संघर्षों, उनकी सांस्कृतिक अस्मिता और व्यवस्था के शोषण का मार्मिक चित्रण करती है। यह कहानी प्रतीकात्मक रूप से दर्शाती है कि किस प्रकार शोषक वर्ग आम आदमी के जीवन का रस चूसकर उसे 'चुसी हुई ईख' (खोखला) बना देता है।

कहानी का शीर्षक "चुसी हुई ईख" एक शक्तिशाली प्रतीक है जो मॉरीशस में प्रवासी भारतीयों के जीवन के कठिन अनुभवों को दर्शाता है। ईख, जो मॉरीशस की कृषि और अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण हिस्सा थी, इन लोगों के श्रम का प्रतीक बन जाती है। जिस प्रकार ईख से रस निकालकर उसे फेंक दिया जाता है, उसी प्रकार कहानी उन लोगों के संघर्षों को उजागर करती है जिनके श्रम का दोहन किया गया और उन्हें हाशिए पर धकेल दिया गया।

कहानी ग्रामीण मॉरीशस के परिवेश का यथार्थवादी चित्रण प्रस्तुत करती है, जहाँ गरीबी और असमानता व्याप्त है। पात्रों के माध्यम से, लेखक ने उनके दैनिक जीवन की चुनौतियों, उनके कष्टों और उन सामाजिक और आर्थिक कठिनाइयों को दर्शाया है जिनका उन्हें सामना करना पड़ा। यह कहानी केवल भौतिक कठिनाइयों तक सीमित नहीं है, बल्कि उन मानसिक और भावनात्मक बोझ को भी छूती है जो इन लोगों ने अनुभव किया।

अभिमन्यु अनत की रचनाओं में मानवीय पीड़ा और प्रतिकूल परिस्थितियों में भी जीवित रहने की भावना अक्सर दिखाई देती है, और "चुसी हुई ईख" इसका एक उत्कृष्ट उदाहरण है। कहानी के पात्रों में अपनी कठिन परिस्थितियों के बावजूद हार न मानने का दृढ़ संकल्प है। यह संघर्ष और अन्याय के खिलाफ दबी हुई चेतना को दर्शाता है, जो उन्हें अपने अस्तित्व और गरिमा के लिए लड़ने की प्रेरणा देता है।

इस प्रकार "चुसी हुई ईख" अभिमन्यु अनत की एक महत्वपूर्ण कहानी है जो मॉरीशस के प्रवासी भारतीयों के जीवन संघर्षों और लचीलेपन को दर्शाती है। यह कहानी शोषण के प्रभाव और मानवीय आत्मा की अदम्य शक्ति को उजागर करने के लिए प्रतीकों और यथार्थवादी कथा का उपयोग करती है। यह उन समुदायों की आवाज़ बनकर साहित्य में भारतीय संस्कृति और भाषा के योगदान को भी रेखांकित करती है जिनके अनुभवों को अक्सर अनदेखा किया जाता रहा है।

3. 'अखबार'

'अखबार' कहानी आधुनिकता और सूचना के प्रसार के साथ-साथ ग्रामीण या कस्बाई जीवन में होने वाले परिवर्तनों और राजनीतिक चेतना के उदय को दर्शा सकती है। यह दिखाती है कि कैसे बाहरी दुनिया की खबरें स्थानीय जीवन को प्रभावित करती हैं और लोगों के विचारों को नया आकार देती हैं। कहानी में बताया गया है कि एक अखबार मंत्री जी द्वारा निकाला जाता था उसमें मंत्री जी की खूब प्रशंसा की जाती थी। कहानी के माध्यम से उस समय की मीडिया के आडंबर को बताया गया है कि एक दिन चार पांच युवक मंत्री जी से मिलने के लिए घंटे तक उसके आंगन में खड़े रहे वह चपरासी को विश्वास दिलाते रहे कि पिछले चुनाव में उन्होंने मंत्री जी की खूब सहायता की थी लेकिन इसी दौरान मंत्री जी के एक कुत्ते ने एक युवक को काट लिया।

“उस दिन गाँव के चार-पाँच युवक मंत्री से मिलने के लिए घंटों से आँगन में खड़े थे। आधा घंटा तो उन चारों को चपरासी को यह विश्वास दिलाने में लगा था कि पिछले चुनाव में उन्होंने मंत्री के लिए खून-

पसीना एक कर दिया था। उस युवक को ज़ोर की प्यास लगी और वह डरते हुए फुलवारी की ओर बढ़ा, जहाँ नल के पानी से कैक्टस नीचे जा रहे थे। उनका वहाँ तक पहुँचना था कि मंत्री का अल्शेसियन कुत्ता उस पर झपट पड़ा। इससे पहले कि वह युवक पीछे को हटता, कुत्ते ने अपनी बत्तीसी को उसकी जांघ में धंसा ही दिया। दर्द से चिल्लाकर युवक ने अपने पैर को इस तरह झकझोरा कि कुत्ता सामने के कैक्टस में जा गिरा। इधर युवक की जांघ से खून की धारा बह चली, उधर कुत्ते की आँख में कैक्टस का एक काँटा चुभ गया।“5

जब कुत्ते ने उस युवक पर आक्रमण किया तो अखबार का एक संवाददाता वहीं मौजूद था अखबार ने उस युवक की पीड़ा को उजागर करने की बजाय मंत्री के कुत्ते को प्रमुख खबर बनाते हुए लिखा।

"मंत्री के भोले-भाले कुत्ते को गाँव के एक जंगली युवक ने बेरहमी के साथ लात मारकर उसकी एक आँख फोड़ डाली।"6

4. 'मशीन की मृत्यु'

यह रचना औद्योगीकरण और मशीनीकरण के प्रभाव को चित्रित करती है। यह पारंपरिक जीवन शैली और हस्तकला के समक्ष आधुनिक मशीनों द्वारा उत्पन्न चुनौतियों और इससे होने वाले मानवीय विस्थापन या बदलाव की कहानी कहती है।

कहानी का केंद्रीय विषय उस व्यक्ति की त्रासदी है, जो आधुनिकता की दौड़ में अपनी पहचान खो देता है। कहानी में मशीन सिर्फ एक भौतिक उपकरण नहीं, बल्कि आधुनिक जीवन शैली, औद्योगिकीकरण और भौतिकवाद का प्रतीक है। जब यह 'मशीन' यानि वह जीवन शैली, वो व्यवस्था विफल हो जाती है या मर जाती है, तो व्यक्ति स्वयं को दिशाहीन और अकेला पाता है। यह कहानी दर्शाती है कि किस प्रकार मनुष्य ने स्वयं को मशीनी व्यवस्था का एक पुर्जा बना लिया है।

अनत इस बात पर जोर देते हैं कि तकनीक ने मनुष्य को सुविधा तो दी है, लेकिन उससे उसके भावनात्मक और सामाजिक जुड़ाव छीन लिए हैं। लोग एक-दूसरे से कट गए हैं और उनका जीवन नीरस व यांत्रिक हो गया है। कहानी इस बात की आलोचना करती है कि पूंजीवादी व्यवस्था में मानवीय संबंधों की जगह आर्थिक संबंध प्रमुख हो गए हैं, जिससे समाज में विसंगतियां पैदा हुई हैं। 'मशीन की मृत्यु' का प्रतीकात्मक अर्थ गहरे दर्शन को समेटे हुए है। मशीन की मृत्यु वास्तव में उन मूल्यों की मृत्यु है, जो मानवता को परिभाषित करते हैं। कहानी एक चेतावनी है कि यदि मनुष्य केवल भौतिक सुख-सुविधाओं के पीछे भागता रहा और अपने नैतिक तथा भावनात्मक मूल्यों को छोड़ता रहा, तो उसका अस्तित्व भी उसी मशीन की तरह अप्रासंगिक हो जाएगा।

“सूरज सिर के ऊपर आ चुका था। थकान कोलाहल को शिथिल कर दिया था। ईख की कटाई की रफ्तार बराबर चल रही थी। हड्डियों तक की चुभ जाने वाली गर्मी थी। सोनालाल का पूरा शरीर पसीने से लथपथ था जो उसके शरीर को कुछ ठंडक पहुँचा रहा था। उस कड़ाके की धूप में अकुलाहट पैदा कर देनेवाली गर्मी में सोनालाल को अनायास ही ठंड लगने लगी। उसके हाथ की स्फूर्ति कम होती गया। ईख काटने वाले बाक़ी मज़दूर निकल चुके थे। निस्तब्धता छाने लगी थी। सोनालाल को अपनी अनेमिया से पीड़ित राधिका की याद आई फिर तीन महीने पहले मरे हुए उसके बच्चे की भी याद आई... उसे कई यादें आईं। लोगों को सोनालाल का ख़याल नहीं रहा। ईख के घने खेतों के बीच वह कटे हुए जामुनी गन्नों पर पड़ा रहा।“7

अभिमन्यु अनत की 'मशीन की मृत्यु' एक विचारोत्तेजक कहानी है, जो पाठकों को आधुनिक जीवन की चुनौतियों और मानवीय अस्तित्व के गहरे सवालों पर सोचने के लिए मजबूर करती है। यह एक मार्मिक चित्रण है कि कैसे तकनीक पर अत्यधिक निर्भरता मनुष्य को उसकी मानवता से दूर कर सकती है, और इस खोई हुई मानवता को वापस पाने की आवश्यकता पर बल देती है।

5. 'दूध'

'दूध' कहानी मातृत्व, पोषण और जीवन के मूलभूत तत्वों के इर्द-गिर्द बुनी गई है। यह मानवीय संबंधों की पवित्रता और जीवन संघर्षों के बीच भावनात्मक सहारे की आवश्यकता को रेखांकित करती है।

दूध' उनकी उन रचनाओं में से एक है, जो आम आदमी के जीवन संघर्षों, सामाजिक विसंगतियों और मानवीय मूल्यों को दर्शाती है। यह कहानी प्रवासी भारतीयों की समस्याओं और उनके जीवन के यथार्थ पर प्रकाश डालती है। अभिमन्यु अनत को मॉरीशस के हिन्दी कथा-साहित्य का सम्राट कहा जाता है। उनका साहित्य कल्पना पर आधारित नहीं, बल्कि उनके देश की सामाजिक और आर्थिक स्थिति का सच्चा चित्रण है। 'दूध' कहानी भी इसी यथार्थवादी परंपरा का हिस्सा है, जो जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं और उनसे जुड़े संघर्षों को केंद्र में रखती है। यह कहानी गरीबी, शोषण और जीवनयापन के लिए आम आदमी के दैनिक संघर्ष की मार्मिक अभिव्यक्ति है। 'दूध' कहानी का कथानक आम जीवन के इर्द-गिर्द बुना गया है। यह कहानी मुख्य रूप से गरीबी और आर्थिक विषमता के विषय को उठाती है। कहानी में 'दूध' एक प्रतीक के रूप में इस्तेमाल हुआ है, जो न केवल पोषण की आवश्यकता को दर्शाता है, बल्कि जीवन की गुणवत्ता और समृद्धि की लालसा को भी व्यक्त करता है। कहानी के पात्र साधारण लोग हैं, जो जीवन की बुनियादी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए कड़ी मेहनत करते हैं। अभिमन्यु अनत ने इन पात्रों के माध्यम से मॉरीशसीय समाज में व्याप्त पूंजीपतियों के शोषण, महंगाई की मार और सामाजिक न्याय से वंचित नागरिकों की व्यथा को सामने लाया है। 'दूध' की कमी या उसकी अनुपलब्धता यह दर्शाती है कि समाज का एक बड़ा वर्ग आज भी मूलभूत पोषण से वंचित है। कहानी यह प्रश्न करती है कि जहाँ पसीने की कीमत इतनी कम आँकी जाती है, वहाँ मजदूर उसे इतने सस्ते में क्यों बेच देता है?

जमींदार के बेटे को डिब्बे के दूध पर कभी विश्वास नहीं था। जमींदार के बेटे को धनिया जब दूध पिलाती हैं तो वह अपने बेटे के बारे में सोचती रहती है जैसे -

"जमीदार के बच्चे को दूध पिलाते समय उसे हर वक़्त अपने बच्चे की याद तड़पा जाती, जिसे वह अपनी सास की गोद में छोड़ आई थी। उसे केवल बच्चे को प्यार न कर पाने का दुःख था, उसको दूध न पिला पाने का नहीं। क्योंकि वह जानती थी कि उसका बच्चा तो गरीब घर का जन्मा है और ग़रीब बच्चे तो साबूदाने और इधर-उधर के पानी से भी पेट भर लेते हैं।"8

अनत की लेखन शैली की विशेषता उनका यथार्थवाद है। वे अपनी कहानियों में मुहावरों, कहावतों और लोकोक्तियों का सहजता से प्रयोग करते हैं, जिससे भाषा में सजीवता और स्थानीयता आ जाती है। 'दूध' कहानी में भी यह स्पष्ट होता है, जहाँ वे सीधे और सरल शब्दों में जीवन की जटिलताओं को पाठकों के सामने रखते हैं। कहानी का उद्देश्य केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि सामाजिक चेतना जागृत करना है। वे मानवीय जीवन की विसंगतियों को व्यंग्यात्मक ढंग से भी अभिव्यक्त करते हैं।

'दूध' कहानी मानवीय संबंधों और भावनाओं को भी गहराई से छूती है। विपरीत परिस्थितियों में भी पात्रों का एक-दूसरे के प्रति समर्थन और जीवन के प्रति कभी न टूटने वाला संकल्प प्रेरणा देता है। कहानी दर्शाती है कि आर्थिक तंगी के बावजूद, मानवीय गरिमा और रिश्ते महत्वपूर्ण बने रहते हैं। कहानी के माध्यम से लेखक यह संदेश देते हैं कि समाज में समानता और न्याय स्थापित होना चाहिए, जहाँ हर किसी को गरिमापूर्ण जीवन जीने और पोषण जैसी बुनियादी चीज़ें हासिल करने का अधिकार हो।

"महीने बाद वह घर लौटी। अपनी बावली ममता को न रोक पाने के कारण उसने किसी पागल की तरह अपने बच्चे को सीने से चिपका लिया। उस गर्मी का आदी न होने के कारण बच्चा रो पड़ा। धनिया ने अपने चूसे हुए स्तन को उसके मुँह में पहुँचाया, पर उस स्वाद से अनभिज्ञ बच्चे ने मुँह हटा लिया। धनिया अपने बच्चे को साँवला छोड़ गई थी। उसके चेहरे पर पीलेपन को गोरापन समझ वह अगाध प्यार के साथ उसे देखती रही-कल जो अनहोनी होनेवाली थी, उससे एकदम अनभिज्ञ।"9

अभिमन्यु अनत की कहानी 'दूध' केवल एक कथा नहीं, बल्कि एक सामाजिक दस्तावेज है, जो मॉरीशस के आमजन की परेशानियों और संघर्षों को उजागर करता है। यह कहानी दर्शाती है कि कैसे एक साधारण सी वस्तु 'दूध' जीवन के गहरे अर्थों, अभावों और आशाओं का प्रतीक बन सकती है। अनत की यह रचना पाठकों को समाज की असमानताओं पर सोचने और मानवीय मूल्यों को समझने के लिए प्रेरित करती है।

6. 'जीवित मुर्दा'

यह कहानी समाज के उन व्यक्तियों की ओर इशारा करती है जो शारीरिक रूप से तो जीवित हैं, लेकिन सामाजिक या आर्थिक शोषण के कारण अपनी मानवीय गरिमा खो चुके हैं। यह कहानी व्यवस्था के विरुद्ध एक मूक चीत्कार है।

'जीवित मुर्दा' कहानी का शीर्षक अपने आप में प्रतीकात्मक है। यह उन लोगों की स्थिति को उजागर करता है जो शारीरिक रूप से तो जीवित हैं, लेकिन सामाजिक उपेक्षा, आर्थिक शोषण और व्यक्तिगत दुखों के कारण भावनात्मक या मानसिक रूप से मृत हो चुके हैं। कहानी के माध्यम से, अभिमन्यु अनत ने समाज में व्याप्त उन विद्रूपताओं और विसंगतियों पर करारा व्यंग्य किया है, जो मनुष्य को उसकी गरिमा और पहचान से वंचित कर देती हैं।

कहानी का मुख्य पात्र या पात्रों का समूह उन आम लोगों का प्रतिनिधित्व करता है, जो जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं और सम्मानजनक अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रहे हैं। वे व्यवस्था के शिकार हैं, जहाँ पूंजीपतियों का शोषण, राजनीतिक भ्रष्टाचार और जातिगत भेद-भाव उनके जीवन को नरक बना देता है। कहानी में मानवीय मूल्यों का क्षरण और व्यक्ति की पहचान का संकट प्रमुखता से उभरा है। पात्र अपने अस्तित्व की तलाश में हैं, लेकिन सामाजिक ताना-बाना उन्हें ऐसा करने से रोकता है।

अभिमन्यु अनत के साहित्य की विशेषता सामाजिक यथार्थ का सजीव चित्रण है, और 'जीवित मुर्दा' भी इसका अपवाद नहीं है। कहानी के माध्यम से उन्होंने मॉरीशस के ग्रामीण जीवन की समस्याओं, मजदूरों की दुर्दशा और बदलते सामाजिक परिदृश्य को दर्शाया है। वे दिखाते हैं कि किस प्रकार लोग अपनी समस्याओं से जूझते हुए अपनी सारी जीवंतता खो देते हैं। कहानी में यह प्रश्न उठाया गया है कि क्या ऐसे जीवन का कोई अर्थ है, जहाँ मनुष्य केवल सांस ले रहा है, लेकिन वास्तविक जीवन से दूर है।

उन्होंने पौराणिक पात्रों और कथाओं का भी जिक्र किया है, जिससे कहानी के नैतिक और मूल्यपरक भाव पाठकों तक आसानी से पहुंचते हैं। कहानी की संरचना ऐसी है कि पाठक पात्रों के दर्द से जुड़ पाते हैं और सामाजिक अन्याय के प्रति उनमें एक चेतना जागृत होती है। 'जीवित मुर्दा' केवल एक कहानी नहीं, बल्कि एक सामाजिक दस्तावेज है जो अभिमन्यु अनत की मानवीय पीड़ा के प्रति संवेदनशीलता को दर्शाती है। यह हमें यह सोचने पर मजबूर करती है कि हमारे आस-पास कितने ही लोग 'जीवित मुर्दा' की तरह अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं, जिनके जीवन में आशा और गरिमा का कोई स्थान नहीं है।

"तुम्हारा मतलब है कि मंत्री और उनकी कुर्सी के कारण इस ग़रीब को तीन वर्ष जीवित मुर्दा रहना होगा?"10

7. 'एकलव्य का अंगूठा', 'उद्घाटन' और 'नचिकेता'

इन कहानियों में पौराणिक पात्रों और कथाओं का जिक्र है, जिनके माध्यम से लेखक नैतिक मूल्यों और समकालीन सामाजिक मुद्दों को जोड़ते हैं। 'एकलव्य का अंगूठा' गुरु-शिष्य परंपरा, त्याग और सामाजिक असमानता पर प्रश्न उठाता है। 'उद्घाटन' किसी नए कार्य, परिवर्तन या घटना के आरंभ का प्रतीक है, जिसके माध्यम से लेखक किसी सामाजिक या राजनीतिक विसंगति का उद्घाटन करते हैं। 'नचिकेता' ज्ञान की खोज, सत्यनिष्ठा और मृत्यु के रहस्य जैसे दार्शनिक विषयों को छूती है, जो पाठक को गहरे स्तर पर सोचने पर मजबूर करती है।

अभिमन्यु अनत की कहानियाँ अक्सर सामाजिक और राजनीतिक यथार्थ के साथ सांस्कृतिक और नैतिक पृष्ठभूमि का सजीव चित्रण प्रस्तुत करती हैं। इन कहानियों में आम जन-जीवन, उनके संघर्ष, समाज में व्याप्त विसंगतियाँ और शोषण के विभिन्न रूप बड़ी सूक्ष्मता से चित्रित किए गए हैं।

'एकलव्य का अंगूठा' :

'एकलव्य का अंगूठा' कहानी महाभारत के प्रसिद्ध प्रसंग को एक नए और आधुनिक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करती है। मूल कथा में, एकलव्य, जो एक भील राजकुमार था, ने द्रोणाचार्य को अपना गुरु मानकर उनकी मिट्टी की मूर्ति के सामने धनुर्विद्या का अभ्यास किया और उसमें महारत हासिल कर ली। जब द्रोणाचार्य ने अपने शिष्य अर्जुन को दिए वचन को निभाने के लिए एकलव्य से गुरुदक्षिणा में उसका दाहिना अंगूठा मांग लिया, तो एकलव्य ने बिना किसी हिचकिचाहट के अपना अंगूठा काटकर दे दिया।

अभिमन्यु अनत की कहानी इस पौराणिक बलिदान को आधुनिक समाज में व्याप्त जातिवाद, अवसर की असमानता और प्रतिभा के शोषण के प्रतीक के रूप में इस्तेमाल करती है। कहानी दर्शाती है कि किस प्रकार सदियों से कुछ वर्गों की प्रतिभा को सामाजिक पूर्वाग्रहों और व्यवस्थागत अन्याय के कारण कुचला जाता रहा है। आधुनिक 'एकलव्य' अपने समर्पण और आत्म-प्रशिक्षण के बावजूद, प्रभावशाली वर्गों के निहित स्वार्थों के कारण अपनी पूरी क्षमता का प्रदर्शन नहीं कर पाते। यह कहानी एक प्रश्न खड़ा करती है: क्या आज भी समाज और राजनीति में योग्यता से ज्यादा जातिगत समीकरणों को महत्व दिया जाता है? यह व्यवस्था द्वारा वंचितों के दमन और उनके अधिकारों के हनन की मार्मिक अभिव्यक्ति है।

'उद्घाटन' :

यह कहानी आधुनिक समाज के राजनीतिक पाखंड, भ्रष्टाचार और अवसरवाद पर एक गहरा व्यंग्य है। इस कहानी में अभिमन्यु अनत ने दिखाया है कि किस प्रकार नेता और प्रभावशाली व्यक्ति अपनी छवि

चमकाने और वोट बैंक के लिए किसी भी हद तक गिर सकते हैं। कहानी का कथानक प्रतीकात्मक रूप से समाज की उन विडंबनाओं को उजागर करता है जहाँ सार्वजनिक हित के नाम पर होने वाले कार्य केवल दिखावा मात्र होते हैं। उद्घाटन समारोह, जो विकास और प्रगति का प्रतीक होना चाहिए, भ्रष्टाचार और फिजूलखर्ची का मंच बन जाता है। नेताओं का जनता से किया गया वादा और उनकी कथनी व करनी में भारी अंतर होता है। यह कहानी दर्शाती है कि आम आदमी के मुद्दे गौण हो जाते हैं, और सत्ताधारी वर्ग अपने निजी हितों को साधने में लगा रहता है। कहानी एक 'मिस्टर अभिमन्यु' (महाभारत के अभिमन्यु से भिन्न) का चित्रण करती है जो सुविधाभोगी और कायर है, और अंततः भ्रष्ट व्यवस्था का ही एक हिस्सा बन जाता है।

'नचिकेता' :

'नचिकेता' कहानी कठोपनिषद में वर्णित पौराणिक कथा पर आधारित है, जहाँ युवा नचिकेता मृत्यु के देवता यमराज से आत्मा और मृत्यु के रहस्यमय ज्ञान को प्राप्त करने के लिए यमलोक जाता है। अभिमन्यु अनत इस प्राचीन कथा के माध्यम से आधुनिक जीवन के भौतिकवाद, क्षणभंगुर सुखों की निरर्थकता और सच्चे ज्ञान की महत्ता को रेखांकित करते हैं।

कहानी में नचिकेता का अपने पिता वाजश्रवा द्वारा यज्ञ में बूढ़ी और अनुपयोगी गायों को दान में देने के कृत्य पर सवाल उठाना, स्थापित मान्यताओं और धार्मिक पाखंड के प्रति लेखक के विद्रोह को दर्शाता है। नचिकेता का ज्ञान की खोज में अडिग रहना, यमराज द्वारा दिए गए सांसारिक प्रलोभनों को ठुकरा देना, यह संदेश देता है कि सच्चा सुख भौतिक संपदा में नहीं, बल्कि आत्मज्ञान और नैतिक मूल्यों में निहित है। अनत ने इस कहानी के माध्यम से पाठकों को 'श्रेय' (कल्याण का मार्ग) और 'प्रेय' (प्रिय वस्तुओं का मार्ग) के बीच का अंतर समझाते हुए, श्रेय मार्ग चुनने के लिए प्रेरित किया है।

अभिमन्यु अनत की कहानियां 'एकलव्य का अंगूठा', 'उद्घाटन' और 'नचिकेता' - केवल मनोरंजन के लिए नहीं हैं, बल्कि ये सामाजिक चेतना को जगाने का एक सशक्त माध्यम हैं। वे पौराणिक कथाओं और पात्रों को आधुनिक संदर्भों में ढालकर जटिल सामाजिक, राजनीतिक और दार्शनिक मुद्दों पर विचार करने के लिए प्रोत्साहित करती हैं। उनकी रचनाएँ मॉरीशस के गिरमिटिया मजदूरों के संघर्ष से लेकर समकालीन राजनीति की विसंगतियों तक, मानवीय जीवन के विभिन्न पहलुओं को गहराई से छूती हैं। इन कहानियों के माध्यम से, अभिमन्यु अनत ने हिंदी साहित्य में एक अमूल्य योगदान दिया है, जो पाठकों को अपने मूल्यों की रक्षा करने और एक बेहतर समाज के निर्माण के लिए जागरूक रहने का आह्वान करता है।

अभिमन्यु अनत का गद्य साहित्य मॉरीशसीय समाज का एक जीता-जागता दस्तावेज़ है। उनकी रचनाएं, जिनमें 'नन्हे मछुए का भाग्य' से लेकर 'नचिकेता' तक शामिल हैं, आम लोगों की समस्याओं, उनके सांस्कृतिक मूल्यों, संघर्षों और आकांक्षाओं को कलात्मक रूप से प्रस्तुत करती हैं। वह सामाजिक यथार्थ के साथ-साथ सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का भी सजीव चित्रण करते हैं। उनकी कहानियों में चित्रित युगीन परिदृश्य, राजनीतिक भ्रष्टाचार और मानवीय त्रासदी प्रवासी साहित्य में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। अभिमन्यु अनत इन रचनाओं के माध्यम से न केवल मॉरीशसीय भारतीयों की अस्मिता को स्वर देते हैं, बल्कि सार्वभौमिक मानवीय भावनाओं और संघर्षों को भी अभिव्यक्ति देते हैं।

संदर्भ सूची :

1 मॉरीशस का सृजनात्मक हिंदी साहित्य, चयन एवं संपादन विमलेश कांति वर्मा, पृष्ठ 203
2 वही, पृष्ठ 205
3 वही, पृष्ठ 206
4 वही, पृष्ठ 207
5 वही, पृष्ठ 208
6 वही, पृष्ठ 208
7 वही, पृष्ठ 210
8 वही, पृष्ठ 211
9 वही, पृष्ठ 212
10 वही, पृष्ठ 213